RAJYA SABHA

Thursday, 19th. *December,* 1985/28 *Affratmyana,* 1907 *(Saha)*

The House met at eleven o£ the clock. Mr. Chairman in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

*****441. *[The questioner (Shri Syed Rahmat Ali) was absent. For answer* vide cols. 3i infra.]

*4«2. *[The questioner (Miss Saroj Khaperde) was absent. For answer* vide *sols.* 31—33 infra.]

गोआ में समुद्र तट के समीप प्राचीन मन्दिरों के अवशेषों की खोज

*443. **श्री लाल कृष्ण अडवाणी :***
श्री प्यारेलाल खंडेलवाल† :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोआ के समुद्रीय पुरातात्विक एकक ने द्वारिका में समुद्र तट के पास प्राचीन मंदिरों तथा पोतों के अवशेष खोजे हैं; और

(ख) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा महासागर विकास, परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रानिकी और अन्तरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री (श्री शिवराज पाटिल) : (क) डा० एस० आर० राव, सेवानिवृत्त अधीक्षक पुरातत्वेत्ता, भारती पुरातत्व सर्वेक्षण ने द्वारिका के समीप समुद्रतट में प्राचीन अवशेषों की खोज की सूचना दी है। राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान ने अनुपातिक सहायता प्रदान की थी।

(ख) राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एन एसए) अनुदान के अंतर्गत एनआइओ द्वारा प्रदान की गई अनुपातिक सहायता से डा० एस० आर० राव द्वारा वर्ष 1981 में अन्वेषण प्रारंभ किये गये थे। पेट द्वारिका क्षेत्र में किये गये कार्य से पुरातत्वीय जानकारी का पता लगा है। ये हड़प्पा काल के बाद की बताई गई हैं। वर्ष 1983-84 के दौरान द्वारिका के प्राचीन पोताश्रय के प्रवेश स्थान से दूर अपतटीय सर्वेक्षण आयोजित किये गये। एक दीवार जैसी समरेखण का पता लगा है। बहुत से पत्थरों के अंत-ज्वारभाटा क्षेत्र में डूबने से दीवार पर कटाव बेंच की सूचना मिलती है। डा० राव ने समुद्र-तटीय क्षेत्रों में विभिन्न स्थलों पर अन्वेषण हेतु एक तीन वर्षीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। यह कार्यक्रम विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) को धन की व्यवस्था हेतु प्रस्तुत किया गया है। डीएसटी ने सहायता प्रदान करने के लिये अपनी सहमति प्रदान कर दी है। सीएसआइआर ने एनआइओ के माध्यम से न्यूनतम अनुपातिक सहायता देने के लिए स्वीकृति दे दी है।

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल : सभापति जी, इस खोज से एक बात की ओर सरकार का विशेष ध्यान गया है कि भारत के प्राचीन ग्रंथों में जिन बातों का वर्णन मिलता है उनमें से बहुत सी बातें अगर खोजी जायें तो सच निकलेंगी। पेट द्वारिका की खोज में समुद्र के तट की खोज में जो चीजें सामने आई हैं उनसे यह बात जाहिर होती है। मैं माननीय मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि पुराने ग्रंथों में द्वारिका का जो वर्णन मिलता है वह और खोज के बाद जो अवशेष मिले हैं इन दोनों में कोई समानता मालूम पड़ती है और अगर अभी तक मालूम नहीं पड़ी है तो क्या इस सामानता को खोजने की, निकालने की कोशिश वैज्ञानिक करेंगे, यह पहला सवाल है।

MR CHAIRMAN; Don't stand between the speaker and the Chair.

†सभा में यह प्रश्न श्री प्यारेलाल खंडेलवाल द्वारा पूछा गया।

श्री प्यारे लाल खंडेलवाल : मैंने क्वेश्चन पूछ लिया है।

श्री शिवराज पाटिल : श्रीमन्, द्वारिका का जो ग्रंथों में वर्णन है और जो पाया गया है उसमें समानता है या नहीं, यह बताना बड़ा मुश्किल है। जो पाया गया है उन वस्तुओं में एक जार है, एक सील है और पानी के नीचे जो जमीन है उसके नीचे एक दीवार पायी गई है इससे यह पता चलता है कि पेट द्वारिका के समीप समुद्र में जहाज आने जाने के लिए सुविधाएं थीं। वहां की जो संस्कृति थी वह बड़ी उन्नत थी मगर जैसा ग्रंथों में उसका वर्णन है वह वैसी है या नहीं यह बताना मुश्किल है।

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल : सभापति जी, प्राचीन ग्रन्थों में और भी बहुत सी बातों का वर्णन है जैसे द्वारिका का वर्णन है वैसे ही लंका का वर्णन है। मैं जानना चाहता हूं कि प्राचीन ग्रंथों में जिन वैज्ञानिक या अन्य प्रकार की बातों का उल्लेख है ऐसी बातों की खोज के लिए सरकार कोई उपाय करने जा रही है और क्या कुछ लोगों को इसके लिए डिप्यूट किया गया है।

श्री शिवराज पाटिल : श्रीमन्, इस संबंध में कुछ कार्यवाही जरूर की जा रही है और हमारे समुद्र के किनारों पर 3 जगहों में इस शोध का काम चालू है एक तो पेट द्वारिका के समीप। दूसरा जो ऐलीफेंटा केव्स है, जिसको राज बन्दर कहा जाता है वहां पर पानी के नीचे, जमीन के नीचे कुछ दीवारें मिली हैं जिससे पता चलता है कि वहां पर जहाज आते होंगे। और तीसरी जो जगह है, वह है कावेरी पत्तनम के समीप वहां पर भी कुछ इस प्रकार की जमीन के नीचे चीजें मिली हैं। उस का भी शोध चल रहा है और थोड़े से पैमाने पर गोआ के समीप भी इसका काम चालू है और यह जो कन्या कुमारी है, उसके समीप भी थोड़ी सी मालूमात मिली है।

हमको जो मालूमात मिली है उससे पता चलता है कि जगह जगह पर जहाज डूबे हुए हैं और कुछ-कुछ जगह पर कुछ ऐसे अवशेष पाये गये हैं कि वहां पर जहाज आते होंगे।

इन सब चीजों की मालूमात ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद, आर्कियालोजिकल डिपार्टमेंट में जो ग्रन्थ हैं, उनका अध्ययन करने के बाद जो मालूमात मिली है, उसके आधार पर कुछ सुधार करने का काम जरूर चल रहा है।

श्री पशुपति नाथ मुकुल : सभापति महोदय, श्री कृष्ण जी की जो द्वारिका थी, वह पांच हजार वर्ष पुरानी थी। लगभग पांच हजार वर्ष पहले श्री कृष्ण जी यहां थे उस संसार में जैसा हमारे धर्म ग्रन्थों में है और उनकी द्वारिका उनके सामने ही नष्ट हो गई थी, समुद्र के अंदर चली गई थी।

तो जो अवशेष समुद्र के अंदर पाये गये हैं। क्या हमारे वैज्ञानिकों ने उससे, उस समय की 'एज' निकालने की कोशिश की है कि वह कितने वर्ष पुराने हैं? आज हमारी साईंस इतनी उन्नत है कि चाहे पेड़ हो, चाहे कोई भी पदार्थ हो, हम उसकी 'एज' जांच सकते हैं कि यह इतना पुराना है।

तो वह जो अवशेष मन्दिर या जो दीवार या जो पदार्थ पाये गये हैं, अगर उनकी 'एज' पांच हजार वर्ष पुरानी आती है, तो तय हो जाता है कि वह उसी समय के हैं जब श्री कृष्ण भगवान थे और उनकी द्वारिका नष्ट हुई थी।

तो क्या इस तरह के अन्य पदार्थों की 'एज' जानी गई है या जानने का प्रयास किया जाएगा।

श्री शिवराज पाटिल : उनका ऐसा कहा गया है कि वह हड़प्पन संस्कृति जिस समय में थी, उस समय के वह अवशेष पाये जाते हैं और जमीन के ऊपर जो मिट्टी जमा हो गई है, पानी के नीचे,

जमीन के ऊपर जो मिट्टी जमा हो गई है, वह तीन सौ साल में एक मीटर तक जमा होती है, ऐसा उनका कुछ कहना है।

उसके आधार पर उन्होंने बताया है कि यह हड़प्पन पीरियड के अवशेष हैं।

श्री पशुपति नाथ सुकुल : वह भी पाच हजार वर्ष के करीब हैं।

श्री धर्मचन्द्र प्रशांत : सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहूंगा कि जैसा कि महाभारत में लिखा है कि जिस समय भगवान श्री कृष्ण ने अपना शरीर छोड़ दिया और यादव कट कर मर गये और अर्जुन ने महिलाओं को निकाल दिया, तो द्वारिका डूब गई।

क्या आज की जो द्वारिका है, यह वही है या दूसरी है?

MR. CHAIRMAN; 'THE question is about Goa.

श्री धर्मचन्द्र प्रशान्त : क्या आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ने इस पर खोज की है कि वह द्वारिका जो डूबी हुई है वह वही है या कोई और है?

श्री शिवराज पाटिल : मैं आपसे विनती करूंगा कि जरा प्रश्न. . .

MR. CHAIRMAN: He wants to know acout the submersion oi Dwarika and what the investigation'has proved

श्री शिवराज पाटिल : जो पानी के नीचे अवशेष मिल रहे हैं, वह श्री कृष्ण की द्वारिका के ही हैं या उसके पश्चात् की द्वारिका के हैं, यह निश्चित रूप से बताना मुश्किल है। वह जगह ऐसी है कि जहां पर जहाज आते होंगे और बहुत बड़े पैमाने पर आते होंगे और उसका उपयोग किया गया है। निश्चय ही वह श्री कृष्ण की द्वारिका है, या उनके बाद की द्वारिका है, यह बताना मुश्किल है।

श्री धर्मचन्द्र प्रशान्त : हड़प्पन पीरिएड के पहले की या महाभारत के समय की?

MR. CHAIRMAN: We will go to the next question.

Combating the propaganda by Sikl extremists abroad

*444. SHRI KAPIL VERMA: Will tihe Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government have con ducted any campaign to counterae: the Sikh extremist propaganda in US, UK, Canada and other countries:
so, with what results;

(b) whether Government propose to set up regional centres of informa -tion to combat the propaganda of the pro-Khalistan elements in those countries; and

(c) if so, what are the detail: this regard?

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI B, R. BHAGAT.: (a) The Government have, on a continuing basis provided material to counteract, anti-India propaganda by Sikh extremists groups in US, UK, Canada and other places. Apart from print and audio, video material has also been distributed. These mater > have been distributed by our Missions to associations, of people of Indian origin, media academic institutions and public figures. These efforts have, on the whole, promoted a better understanding of Government policies and particularly the Punjab cord.

(b) No, Sir.

(c) Question does not arise.

SHRl KAPIL VERMA; Anti-Indi5»i propaganda i_s being carried on by extremists who aie, strictly speaking, foreign nationals. The visiting Canadian Secretary of State fo_r External Affairs, Mr. Charles Joseph Clai had discussions with the Prime Minister and the External Affairs Minister when the problemi of Sikh extremists Was reportedly discussed, according to today's newspapers. I would like to know whether the question of stopping the extremist propaganda